सामाजिक समूह का वर्गीकरण
(Classification of Social Group)

सामाजिक समूह व्यक्तियों के उस योग को कहते है जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के बीच निश्चित संबंध होते है और प्रत्येक व्यक्ति समूह के प्रति और इसके प्रतिको के प्रति सचेत होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि समूह से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों के संग्रह से है जो एक दूसरे के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते है।

जिन समूहों के हम सदस्य होते है, वे सभी समान महत्व के नहीं होते है। कुछ समूह हमारे जन्म से जुड़े होते है। जैसे- परिवार, जाति, प्रजाति इत्यादि ऐसे समूह है जो हमारे जन्म से जुड़े होते है। ऐसे समूह के सदस्य हम अपने जन्म के पश्चात से ही बन जाते है। जैसे यदि हम एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेते है तब हम उस परिवार के सदस्य स्वयं बन जाते है और ब्राह्मण जाति के सदस्य हो जाते है।

दूसरे प्रकार के समूह वे हैं जिनके सदस्य हम अपनी पसंदगी से हैं लेकिन जिनके बिना भी हमारा काम नहीं चल सकता है। जैसे- चिकित्सालय, विश्वविद्यालय, व्यवसायिक संगठन सार्वजनिक प्रतिष्ठान और ऐसे ही अनेकों संगठन है जिनका योगदान हमारे जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण है।

अब हम समूह को वर्गीकरण करते हैं। समाजशास्त्रियों ने समूह का वर्गीकरण तो किया है, लेकिन इस संबंध में उनमें कोई एक राय नहीं है। किसी विद्वान ने समूह को आकार के आधार पर वर्गीकृत किया है। किसी ने कुछ और को आधार मानकर वर्गीकृत किया है।

लेस्टर वॉर्ड ने समूह को मुख्यतः दो भागों मे विभक्त किया है। — ① ऐच्छिक समूह ② अनिवार्य समूह। इनके अनुसार हम अपनी इच्छा से जिन समूह के सदस्य बनते हैं वे ऐच्छिक समूह में आते हैं। जैसे — क्लब की सदस्यता, राजनीतिक दल ट्रेड युनियन इत्यादि ऐच्छिक समूह है। ऐसे समूह के सदस्य जिसमें शामिल होना हमारी इच्छा पर निर्भर नहीं है बल्कि अनिवार्य रूप से हमे उस समूह का सदस्य बनना ही पड़ता है। जैसे - परिवार जाति अथवा प्रजाति।

समनर ने सदस्यों के बीच घनिष्ठता एवं सामाजिक दूरी के आधार पर समूह को दो वर्गों मे विभक्त किया है। — ① अन्तः समूह ② बाह्य समूह। सी॰ एच॰ कूले (C.H. Cooley) ने समूह के आकार के आधार पर समूह को दो वर्गों में बाँटा है:- ① प्राथमिक समूह एवं ② द्वितीयक समूह।

Smita Kumari
Guest teacher